आन्ध्रा प्रदेश की गैस्ट्रोपोड मात्स्यिकी

जास्मिन एफ[1]*., जगदीश आइ[2]. और पी. पटनायिक[1]

[1] भा कृ अनु प – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान – विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र, विशाखपट्टणम, आन्ध्र प्रदेश

[2] भा कृ अनु प – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान – टूटिकोरिन क्षेत्रीय स्टेशन, टूटिकोरिन, तमिल नाडु

ई- मेल* : jasmin.f.cmfri@gmail.com

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के आरम्भ से भारतीय परम्परा और अर्थव्यवस्था पर फाइलम मोलस्का का अद्भुत प्रभाव पड़ा है। हमारे देश में पुराने ज़माने से लेकर अब तक कवच हस्तशिल्प एक प्रमुख उद्योग है। हमारे जीवन के औद्योगिक, प्रौद्योगिकीय और सौन्दर्य संबंधी विविध पहलुओं पर मोलस्क का अधिक महत्व है। जठरपाद (गैस्ट्रोपोड) फाइलम मोलस्का के अंतर्गत आने वाला सबसे बड़ा और अत्यधिक विविधता वाला वर्ग है। भारतीय तट से जठरपादों की 1900 प्रजातियों सहित मोलस्कों की करीब 3271 प्रजातियों की रिपोर्ट की गयी है। मछुआरों के बीच लघु खाद्य घटक बनाने के अलावा कैल्शियम कार्बोनेट पर आधारित कई उद्योग, हस्तशिल्प और कवच शिल्प उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में कवचों का उपयोग किया जाता है। दक्षिण भारत के अनेक कुटीर उद्योग गैस्ट्रोपोडों के कवच से अनेक कलाकृतियाँ और अन्य सजावटी

चित्र 1. गैस्ट्रोपोड संग्रहण के लिए उपयोग किए जाने वाले नाव और जाल

वस्तुओं का निर्माण करते हैं। विश्व भर में चमकाए गए कवचों और विविध प्रकार की कवच शिल्प सामग्रियों की भारी मांग है।

पारंपरिक मात्स्यिकी

आन्ध्रा प्रदेश में 568 टन समुद्री गैस्ट्रोपोड मात्स्यिकी का आकलन किया गया है। आन्ध्रा प्रदेश के दो प्रमुख अवतरण केंद्र हैं–विषियानगरम जिले के चेपाला कंचेरू नामक मत्स्यन गाँव और काकिनाडा खाड़ी के चोल्लंगी केंद्र। 'कंचेरू' और 'चोल्लंगी' के मछुआरे परंपरागत मछुआरे हैं जो मत्स्यन के लिए कारीगर और छोटे मोटर युक्त जलयानों का उपयोग करते हैं। लगभग 50% फाइबर से बनी नांव हैं और बाकि काष्ठफलक से बनी डोंगी हैं। गैस्ट्रोपोडों को हाथों से पकड़ने के अतिरिक्त मत्स्यन परिचालन के लिए गिल जालों और ड्राग जालों का उपयोग किया जाता है (चित्र. 1)। विभिन्न मौसम के दौरान कंचेरू में मछुआरों द्वारा जालों के आकार के आधार पर 9 प्रकार के गिल जालों का उपयोग किया जा रहा है, जिनके नाम स्थानीय भाषा में इस प्रकार हैं- नारम वला, चांडु वला, पेतुलु वला, जोगा वला, सिरग वला, अट्टुकुला वला, कतिरुवाला वला, पुलुसा वला और डिस्को वला। गिल जालों के निचले भाग में केकडों के साथ पर्याप्त मात्रा में गैस्ट्रोपोडों को उप पकड़ के रूप में पकड़ा जाता है। वर्ष 2012 से 2018 तक की निरीक्षण अवधि के दौरान जठरपाद मात्स्यिकी में उतार–चढ़ाव देखी गयी। वर्ष 2015 के दौरान काकिनाडा खाड़ी में गैस्ट्रोपोडों की पकड़ में भारी वृद्धि हुई परन्तु वर्ष 2017 में बटन कवचों की मांग नहीं होने के कारण पकड़ में कमी हुई (चित्र 2).

गैस्ट्रोपोड मात्स्यिकी की मुख्य प्रजातियां- पिरेनेल्ला प्रजाति (40%), म्यूरेक्स प्रजाति (15%), वोलेगालिया कोक्लिडियम (11%), टेलेस्कोपियम टेलेस्कोपियम (13%), अम्बोनियम वेस्टियारियम (8%) और अन्य (13%) हैं। अक्तूबर से जनवरी तक के महीनों के दौरान शीत वायुप्रवाह के आरम्भ से गैस्ट्रोपोडों का अधिक मात्रा में अवतरण किया गया। इस दौरान एक मछुआरा हर दो महीनों में करीब 2-3 थैली (30-50 कि. ग्रा. प्रति थैली) कवच बेचता है और गैर मौसम के दौरान एजेंटों को 3-4 महीनों में 2 थैली कवच बेचता है।

आनाय उप पकड़ के रूप में मात्स्यिकी

विशाखपट्टणम और काकिनाडा मत्स्यन पोताश्रय में आनाय उप पकड़ में कवचों को देखा गया। आनाय

चित्र 2. काकिनाडा के चोल्लंगी में अवतरण किए गए बटन कवचों की ढेर

चित्र 3. विशाखपट्टणम मत्स्यन पोताश्रय में प्रसंस्करण किए गए जठरपाद कवच सुखाने का दृश्य

मात्स्यिकी में विभिन्न प्रजातियों की मौसमवार उपलब्धतता देखी गयी। पूरे वर्ष में कुछ प्रजातियाँ जैसे कि फिकस, टोन्ना और बुफानेरिया देखी गयी। इसके अतिरिक्त वोलेगालिया कोक्लिडियम, मिराबिलीस्ट्रोम्बस लिस्टेरिया, बाबिलोनिया स्पिरेटा, हरपा मेजर, म्यूरेक्स प्रजाति और नाटिका विटेल्लस अन्य प्रजातियाँ हैं। महिला विक्रेताएं आनायों द्वारा संग्रहित किये कवचों का प्रसंस्करण, सफाई और सुखाने का काम करती हैं (चित्र. 3). इसके बाद एजेंटों को कवच हस्तशिल्प बनाने के लिए बेचती हैं।

विपणन

चूना उद्योग के लिए कवचों का मूल्य प्रति कि. ग्रा. के लिए 2-10 रुपए है और अलंकारी आवश्यकताओं के लिए कवचों की प्रजाति, स्थिति और आकार के आधार पर कवचों का मूल्य 1-50 रुपए निर्धारित होता है। अन्य प्रयोजनों के लिए गैस्ट्रोपोड प्रच्छद (ओपरकुलम) की मांग होने के कारण प्रच्छद सहित पकडे गए कवचों को मृत कवचों से अधिक मूल्य मिल जाता है।

उपयोगिता

कवचों से विविध आकर्षक शिल्प वस्तुएं जैसे कि खिड़की या दरवाज़े के पर्दे, दर्पण या फोटो फ्रेम, घड़ी, दीप छाया, फूलदान, ट्रे, मोमबत्ती स्टैंड, वाल हैंगिंग, आभूषण, प्रदर्शन वस्तुएं आदि तैयार किए जाते हैं। आन्ध्रा तट के संपन्न जलजीव पालन उद्योग और कवच शिल्प उद्योग भी अपनी मांग की पूर्ति के लिए गैस्ट्रोपोडों के विदोहन में योगदान देते रहते हैं।